फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 236 प्रभात जयपुर, मंगलवार 31 मार्च, 2026 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

WHEN THE 'WEREWOLVES' RODE AGAIN

Superstition has endowed the werewolf with superhuman powers. The same man who is timid in the day sheds his human form at night and becomes a ferocious wolf

Lal Bahadur Shastri On BBC

Aapki Yaad Aati Rahi Raat Bhar...

ईरान अब ''पिनपॉइन्ट'' बमबारी कर रहा है, अमेरिका व इज़रायली ठिकानों पर

पर, ऐसी बमबारी करने के लिए इतनी गहरी इंटैलिजैंस जानकारी कहाँ से आ रही है, ईरान के पास?

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 मार्च। ऐसा लगता है कि ईरान ने अपनी युद्ध रणनीति बदल दी है और अब वह अमेरिका और इज़रायल की सेनाओं व ठिकानों पर बेहद चयनात्मक (सलैक्टिव) और लक्ष्य आधारित हमले कर रहा है। इस बदले हुए तरीके को लेकर शक है कि ईरान को बहुत ही सटीक और खास खुफिया जानकारी मिल रही है।

ईरान ने सऊदी अरब के एक बेस पर जमीन पर खड़े अमेरिका के बेहद महत्वपूर्ण ''एवैक्स'' विमान को नष्ट कर दिया। इससे अमेरिकी सेना और सुरक्षा विशेषज्ञों की चिंता बढ़ गई है। अमेरिका के पास ऐसे केवल 17 विमान हैं और ये बहुत ज्यादा कीमती हैं।

माना जा रहा है कि रूस ने ईरान को यह बेहद खुफिया जानकारी दी होगी और मिसाइलों को सही लक्ष्य तक पहुंचाने में मदद की होगी। बिना ऐसी खुफिया जानकारी के, इतना सटीक हमला करना लगभग असंभव माना जाता है।

इन विमानों की कीमत एक बम के बराबर, अर्थात् बहुत अधिक होती है। वर्तमान समय में एक एवैक्स विमान की कीमत लगभग 50 करोड़ डॉलर या उससे भी ज्यादा है। इसके अलावा, ऐसे विमान तैयार करने में करीब एक साल का समय लगता है, जिससे इनकी उपब्धता अपने आप में एक बड़ी समस्या है।

- **यह जानकारी ईरान को रूस दे रहा है और इन जानकारियों की मदद से ही ईरान ने अमेरिका के कीमती एवैक्स विमान को सऊदी अरब के एयरपोर्ट पर नष्ट कर दिया था। यह एवैक्स विमान इतना महंगा है कि अमेरिका के पास अब तक कुल 17 एवैक्स विमान थे और एक विमान की कीमत लगभग आधा बिलियन डॉलर आंकी जाती है।**
- **ईरान इस ''पिन-पॉइन्ट'' जानकारी के कारण ही अब अमेरिका के रडार सिस्टम को लक्ष्य बना रहा है और अब ईरान, उन अमेरिकी सैनिकों को आसानी से बमबारी का लक्ष्य बनाने की तैयारी में है, जिन्हें ट्रंप ईरान भेज रहे हैं।**

सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि ईरान इस क्षेत्र में रडार सिस्टम और निगरानी उपकरणों को निशाना बना रहा है। इससे अमेरिकी सेना के लिए हमलों का पहले से पता लगाना मुश्किल हो सकता है और परिणाम स्वरुप ऐसी सहायक सुविधाओं की कमी के कारण हताहतों की संख्या बढ़ सकती है।

पिछले सप्ताह ईरान ने अमेरिकी एवैक्स विमान को नष्ट किया, जो युद्ध में फोर्स मल्टीप्लायर की तरह काम करते हैं। ये एयरबोर्न वॉर्निंग एंड कंट्रोल सिस्टम (एवैक्स) विमान जमीन पर मौजूद सेना और दुश्मन इलाके में उड़ रहे विमानों को दिशा-निर्देश देते हैं और उन्हें मिसाइल, ड्रोन और अन्य खतरों से बचाने में मदद करते हैं।

ये विमान उड़ते हुए किले और सूचना केंद्र की तरह होते हैं, जो जमीन से लेकर ऊपरी वायुमंडल तक दुश्मन की गतिविधियों की जानकारी जुटाते हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

शिक्षक परीक्षा के ईनामी अपराधी को एसओजी ने पकड़ा

जयपुर, 30 मार्च। राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) द्वारा आयोजित वरिष्ठ अध्यापक (द्वितीय श्रेणी) भर्ती परीक्षा-2022 में फर्जीवाड़ा करने वाले एक बड़े मोहरे को स्पेशल ऑपरेशन्स ग्रुप (एसओजी) ने दबोच लिया है। एसओजी ने 10 हजार रुपये के इनामी अपराधी और डमी परीक्षार्थी सुनील बिश्नोई को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी पिछले दो साल से फरार चल रहा था।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस (एसओजी) विशाल बंसल ने बताया कि वर्ष 2022 की वरिष्ठ अध्यापक भर्ती परीक्षा में मूल अभ्यर्थी सम्पतलाल माली (निवासी चितलवाना, जालोर) ने खुद परीक्षा देने के बजाय अपनी जगह डमी परीक्षार्थी बैठाए थे।

- **सांचोर निवासी सुनील बिश्नोई दो साल से फरार चल रहा था, उस पर 10 हजार रूपए का ईनाम घोषित है।**

पकड़े गए आरोपी सुनील बिश्नोई (निवासी गोदारों की ढाणी, सांचौर) ने 29 जनवरी 2023 को उदयपुर के राजकीय गुरु गोविंद सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय में सम्पतलाल के स्थान पर सामान्य ज्ञान एवं शैक्षिक मनोविज्ञान विषय की परीक्षा दी थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

असम के चुनाव से ''गैंडे'' का क्या संबंध?

गहरा संबंध है, वाइल्ड लाइफ एक्स्पर्ट्स, कंज़र्वेशनिस्ट व वन विभाग के उच्चाधिकारी संगठित हो गए हैं, इस मुद्दे पर

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 मार्च। असम विधानसभा चुनाव और गैंडे के बीच क्या संबंध है?

दरअसल, पर्यावरण संरक्षण से जुड़े लोग और सेवानिवृत्त वन अधिकारी राज्य सरकार के उस आदेश से सख्त नाराज हैं, जिसमें 1600 वन कर्मचारियों को चुनाव ड्यूटी पर लगाने की बात कही गई है। उन्होंने इस आदेश को वापस लेने की माँग की है।

भाजपा शासित इस पूर्वोत्तर राज्य में लुप्तप्राय भारतीय गैंडे पाए जाते हैं, जिनका मुख्य निवास काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान है। इस पार्क में ''ग्रेटर वन हॉर्न्ड राइनो'' (एक सींग वाले गैंडे) की सबसे बड़ी आबादी है। यहां अन्य संकटग्रस्त प्रजातियां भी पाई जाती हैं, जैसे हूलॉक गिब्बन (जो भारत की एकमात्र कपि प्रजाति है) और पिग्मी हॉग, जिनकी संख्या संरक्षण प्रयासों के बाद बढ़ी है।

संरक्षण विशेषज्ञों का कहना है कि ''अगर इतनी बड़ी संख्या में असम फॉरेस्ट प्रोटेक्शन फोर्स (एएफपीएफ) के कर्मचारियों को चुनाव ड्यूटी पर लगाया गया, तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। जंगल और वन्यजीव, शिकारियों के रहमो करम पर रह जाएंगे।'' उन्होंने इस बारे में राज्य के मुख्य सचिव, मुख्य चुनाव अधिकारी और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के विशेष मुख्य सचिव को पत्र लिखकर चिंता जताई है।

इस पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में केरल, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक प्रकृति श्रीवास्तव, उमा शंकर सिंह और ए.के. झा भी शामिल हैं।

इस महीने की शुरुआत में असम सरकार ने एक आदेश जारी किया था,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **ये लोग इस बात पर उद्वेलित हैं कि राज्य सरकार ने एक आदेश पारित करके 1600 वन विभाग अधिकारियों व कर्मचारियों को इलैक्शन ड्यूटी पर लगा दिया है।**
- **काज़ीरंगा में एक सींग वाले गैंडे व अन्य विलुप्त होती वन्य जीवों की नस्लें, जैसे भारत की एकमात्र गुरिल्ला नस्ल हूलॉक गिब्बन व पिगमी हॉग, 1600 वनकर्मियों के चुनाव ड्यूटी पर नियुक्त हो जाने से ''शिकारियों'' की मेहरबानी पर आश्रित हो जाएंगे, अवैध शिकार से बचने के लिए।**
- **केरल, यू.पी. व महाराष्ट्र के प्रिंसिपल चीफ कंज़र्वेटर ने वाइल्ड लाईफ को बचाने व सुरक्षित रखने के लिए असम के मुख्य सचिव, मुख्य चुनाव अधिकारी आदि को पत्र लिखकर असम सरकार के आदेश को निरस्त करने की मांग की तथा सुप्रीम कोर्ट के इस मुद्दे पर आदेश तथा नैशनल ग्रीन ट्रिब्युनल के आदेश का भी उदाहरण दिया।**

नीतीश ने विधान परिषद से इस्तीफा दिया

बिहार की त्रिकोणात्मक राजनीति (भाजपा, जद (यू) व आर.जे.डी.) अब दो ही कैम्प्स (भाजपा व आर.जे.डी.) की लड़ाई रह जायेगी?

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 मार्च। नीतीश कुमार ने आज बिहार विधान परिषद के सदस्य पद से इस्तीफा दे दिया और संभावना है कि वह जल्द ही मुख्यमंत्री पद भी छोड़ देंगे। उन्होंने लगभग दो दशकों तक यह पद संभाला है। ऐसे में सवाल उठता है: बिहार की राजनीति में क्या बदलाव आएगा?

सबसे बड़ा बदलाव यह दिख रहा है कि बिहार की पारंपरिक तीन धुरी वाली राजनीति बदल सकती है। अब तक बिहार की राजनीति के तीन बड़े दल (भाजपा, जेडीयू और आरजेडी) में से किसी भी दो का गठबंधन तीसरे को कमजोर कर देता था। पिछले वर्षों में कुमार ने इस संतुलन को अच्छी तरह संभाला, कभी एक गठबंधन तो कभी दूसरे में जाकर, और इस दौरान उन्होंने रिकॉर्ड दस बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

लेकिन आने वाले समय में यह व्यवस्था बदल सकती है और राजनीति दो ध्रुवों में बंट सकती है, जहां भाजपा और आरजेडी के बीच सीधी टक्कर होगी। इससे इन दोनों पार्टियों को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा, जबकि कुमार की जेडीयू का भविष्य थोड़ा अनिश्चित नजर आ रहा है। जेडीयू के लोग कह रहे हैं कि कुमार राज्यसभा जाने के बाद भी बिहार में ज्यादा सक्रिय रहेंगे, लेकिन उम्मीद है कि पार्टी के लिए हालात पहले जैसे नहीं रहेंगे, क्योंकि जेडीयू की दूसरी पंक्ति में ऐसा कोई नेता नहीं है, जिसकी पहचान, लोकप्रियता और पूरे राज्य में स्वीकार्यता कुमार जैसी हो।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **त्रिकोणात्मक राजनीति में, जो भी दो कैम्प मिल जाते थे, वह ग्रुप सत्ता में आ जाता था, तीसरे कोण को कोने में पटक कर तथा नीतीश बड़ी होशियारी से दो खेमों के ग्रुप में रहते थे तथा 10 बार मुख्यमंत्री बने।**
- **पर अब लगता है कि राजनीतिक संघर्ष, केवल सीधी वर्चस्व की लड़ाई भाजपा व आर.जे.डी. के बीच ही होगी और चाहे कितनी कोशिश करें नीतीश, पुराने दिन शायद लौट कर नहीं आयेंगे।**

मुख्यमंत्री ने महावीर जयन्ती की शुभकामनाएं दीं

जयपुर, 30 मार्च। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की जयंती (31 मार्च) के अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। शर्मा ने कहा कि भगवान महावीर की शिक्षाएं हमें मानवता की सेवा करने और सभी प्राणियों के प्रति करूणा रखने की प्रेरणा देती हैं। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा एवं अपरिग्रह के सिद्धान्त आज भी प्रांसगिक है।

- **उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा एवं अपरिग्रह के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं।**

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्रदेशवासियों का आह्वान किया है कि वे भगवान महावीर के आदर्शों पर चलते हुए समृद्ध समाज के निर्माण में अपना योगदान दें।

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप स्कीम में राज्य सरकारें भी निभाएंगी अहम भूमिकाएं

पूर्व के 2 फेज़ की गलतियों को सुधारते हुए केन्द्र सरकार ने तीसरे फेज़ में बड़ा बदलाव किया

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 30 मार्च। देश में युवाओं को रोजगार से जोड़ने और शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान से रूबरू करवाने के लिए मोदी सरकार जल्द ही ''प्रधानमंत्री इंटर्नशिप स्कीम (पिम्स) का तीसरा फेज लागू करेगी। राजस्थान में 352 युवाओं को 2000 कंपनियों में इंटर्नशिप करवाने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार मिलकर काम करेगी। पिछले 2 फेज में क्रमशः 349 व 313 युवाओं को इंटर्नशिप करवाई गयी थी, लेकिन स्वीकृत पद क्रमशः 4343 तथा 4839 थे।

केन्द्र सरकार ने पूर्व के 2 फेज में रही खामियों और गलतियों को सुधारते हुए पिम्स प्रोजक्ट में कई अहम सुधार के निर्णय लिए हैं। इसमें पहला यह है कि राज्य सरकारों को अधिक जिम्मेदारी सौंपी जाएगी, ताकि इंटर्नशिप प्रोग्राम सफल हो। इस संदर्भ में 30 मार्च को राज्य सरकार के कौशल, उद्यमिता एवं रोजगार विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव ने आदेश जारी किए हैं।

इन आदेशों के मुताबिक राजस्थान स्किल एंड लाइवलीहुड डवलपमेंट कार्पोरेशन (आर.एस.एल.डी.सी.) में राज्य स्तरीय पिम्स सेल का गठन किया जायेगा। कौशल उद्यमिता विभाग के आयुक्त को इस प्रोजक्ट में स्टेट नोडल ऑफिसर बनाया गया है। साथ ही प्रत्येक जिले में एक डिस्ट्रिक्ट नोडल ऑफिसर की नियुक्ति की गई है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024-25 में केन्द्र सरकार ने बजट में घोषणा की थी कि 1 करोड़ युवाओं को 12 माह तक देश की 500 टॉप कंपनियों में इंटर्नशिप करवायी जाएगी। यह प्रोग्राम 21 से 24 वर्ष के युवाओं के लिए बनाते हुए सरकार ने 6000 एकमुश्त तथा 5000 रुपए प्रतिमाह भत्ता देने की घोषणा की थी। परंतु सरकार के इस प्रोजेक्ट को देशभर में कोई खास तव्ज्जो नहीं मिली। युवाओं का इस योजना के प्रति आकर्षण कम रहा।

उदाहरण के लिए अगर राजस्थान की बात करें तो, योजना के प्रथम चरण में 4343 इंटर्नशिप पदों के लिए 27814 लोगों ने आवेदन किया, परंतु मात्र 349 युवा ही इस प्रोग्राम से जुड सके। इसके बाद दूसरे चरण में 4839 पदों के लिए 32 हजार 286 युवाओं ने आवेदन किया, परंतु इस बार भी मात्र 313 युवाओं को ही इस प्रोग्राम से जोड़ा जा सका।

केन्द्र सरकार ने इस प्रोजेक्ट की खामियों को सुधारते हुए अब तीसरे फेज में कई अहम बदलाव किए हैं। इसमें अब 500 के बजाय 2000 कंपनियो में इंटर्नशिप करवायी जाएगी। पूर्व में 21 से 24 वर्ष के युवाओं के लिए यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **अब 18 से 25 वर्ष के युवाओं को 500 के बजाय 2000 कंपनियों में इंटर्नशिप करवाई जाएगी।**
- **युवाओं को दिया जाने वाला भत्ता भी 5000 रुपए प्रतिमाह से बढ़ाकर 9 हजार रुपए किया गया।**
- **राजस्थान में तीसरे फेज़ में 352 युवाओं को इंटर्नशिप करवाने की तैयारी, पूर्व में भी क्रमशः 349 व 313 युवाओं को इस स्कीम से जोड़ा गया था।**

स्पेन ने ईरान युद्ध में शामिल अमेरिकी विमानों के लिये हवाई क्षेत्र बंद किया

मैड्रिड, 30 मार्च। स्पेन ने पश्चिम एशिया में एक माह से जारी युद्ध को पूरी तरह से गैरकानूनी एवं अन्यायपूर्ण करार देते हुए हमलों में शामिल अमेरिकी विमानों के लिए अपना हवाई क्षेत्र बंद कर दिया है। हालांकि आपातकालीन स्थितियों में यह रोक प्रभावी नहीं होगी।

द गार्जियन अखबार और अन्य मीडिया रिपोर्ट में सोमवार को स्पेन की रक्षा मंत्री मार्गरीटा रोबल्स के हवाले से यह बात कही गयी है। रोबल्स ने बताया, ''हमलों में शामिल अमेरिकी विमानों के लिए स्पेन ने अपना हवाई क्षेत्र बंद कर दिया है। हम न तो सैन्य ठिकानों के इस्तेमाल की अनुमति देते हैं और न ही ईरान युद्ध से जुड़ी कार्रवाई के लिए हवाई क्षेत्र के इस्तेमाल की। मुझे लगता

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **इस कदम से स्पेन यूरोप में युद्ध के सबसे बड़े आलोचक के रुप में उभरा।**

ट्रंप की ''लोकप्रियता रेटिंग'' 36 प्रतिशत ही रह गई है अमेरिका में

रॉयटर न्यूज़ सर्विस द्वारा मार्च के अंत में किए गए सर्वे के अनुसार, इतनी कम रेटिंग खतरे की संगीन चेतावनी है, ट्रंप के लिए

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 मार्च। डॉनल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में अब राजनीतिक दबाव साफ दिखने लगा है। हालिया सर्वे बताते हैं कि युद्ध और बढ़ती महंगाई के दोहरे दबाव के कारण जनता के बीच उनकी लोकप्रियता तेजी से कम हो रही है।

मार्च के अंत में किए गए रॉयटर्स/इप्सोस सर्वे के अनुसार, ट्रंप की लोकप्रियता 36 प्रतिशत तक गिर गई है, जो उनके इस कार्यकाल का सबसे निचला स्तर है। पिछले कुछ हफ्तों में यह गिरावट तेज हुई है, खासकर तब से, जब अमेरिका और ईरान के बीच सैन्य तनाव बढ़ा और ईंधन की कीमतों में उछाल आया, जिससे महंगाई को लेकर आम जनता की चिंताएं और बढ़ गईं।

अब 62 प्रतिशत लोग राष्ट्रपति के कामकाज से असंतुष्ट हैं, जो यह दिखाता है कि आम लोगों में आर्थिक चिंता लगातार बढ़ रही है और सरकार पर भरोसा कम हो रहा है।

यह रूझान बहुत कुछ कहता है। आंकड़ों से साफ है कि जब फरवरी के अंत में ईरान से टकराव शुरू हुआ था, तब ट्रंप की लोकप्रियता करीब 39-40 प्रतिशत थी। अब यह घटकर 36 प्रतिशत हो गई है, जिससे पता चलता है कि इस युद्ध का राजनीतिक असर दिखने लगा है, खासकर इसके आर्थिक प्रभाव के कारण, जैसे पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी।

अर्थव्यवस्था, जो पहले ट्रंप की सबसे बड़ी ताकत हुआ करती थी, वही अब उनकी सबसे बड़ी कमजोरी बनती दिख रही है। इसी सर्वे के अनुसार, केवल 29 प्रतिशत लोग उनके आर्थिक कामकाज से संतुष्ट हैं, और महंगाई से निपटने के उनके तरीके को सिर्फ 25 प्रतिशत लोग सही मानते हैं। यह आंकड़े काफी कम हैं, खासकर उस नेता के लिए, जिसने अर्थव्यवस्था सुधारने और महंगाई कम करने के वादों के साथ सत्ता में वापसी की थी।

बढ़ती कीमतों, खासकर ईंधन की कीमतों, ने लोगों की चिंता बढ़ा दी है। ईरान के साथ तनाव का असर सीधे आम लोगों की जेब पर पड़ रहा है, क्योंकि पहले से महंगाई झेल रहे परिवारों पर दबाव और बढ़ गया है।

युद्ध को लेकर भी जनता का नज़रिया उतना ही महत्वपूर्ण है। सर्वे बताते हैं कि अमेरिकियों का एक बहुत बड़ा बहुमत ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई को लेकर संदेह में हैं, यानी, इसस कार्रवाई का विरोध करने वालों की संख्या समर्थन करने वालों की तुलना में कहीं ज्यादा है। इससे यह धारणा भी मजबूत हुई है कि सरकार के फैसले आर्थिक समस्याओं को कम करने के बजाय, बढ़ा रहे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **सर्वे के अनुसार, केवल 29 प्रतिशत अमेरिकी ट्रंप के इकॉनमी को दुरुस्त करने के प्रयासों को सही मानते हैं।**
- **यह चौंकाने वाली बात है, क्योंकि, ट्रंप दूसरी बार राष्ट्रपति पद पर इसी छवि के कारण आए थे कि वे देश के एकमात्र अमेरिकी राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार हैं, जो देश की इकॉनमी को दुरुस्त कर सकते हैं तथा समृद्धि ला सकते हैं।**
- **पर, अब पेट्रोल के दाम बढ़ने से तथा महंगाई के घटने के आसार नहीं दिखने से आम अमेरिकी ट्रंप से निराश हैं और अब यह सोच जोर पकड़ रहा है कि अमेरिका ने खाड़ी देशों के युद्ध में जैसी भूमिका निभाई है, उससे उस इकॉनमी की हालत सुधरी नहीं बिगड़ी ही है।**

ईरान ने इज़रायल की हाइफा तेल रिफायनरी पर हमला किया

तेल अवीव/बेरूत, 30 मार्च। ईरान और हिजबुल्लाह ने एक साथ इज़रायल पर ताबड़तोड़ मिसाइल, रॉकेट और ड्रोन से हमला किया है।

इससे हाइफा तेल रिफाइनरी में विस्फोट के बाद आग लग गई है। फिलहाल रिफाइनरी के ऊपर धुएं का गुबार है। उधर, लेबनान में लड़ाई के दौरान एक इज़रायली सैनिक की मौत हो गई और एक अधिकारी गंभीर रूप से घायल हो गया।

द टाइम्स ऑफ इज़रायल अखबार की रिपोर्ट के अनुसार ईरान और हिजबुल्लाह ने इज़रायल के उत्तर में मिसाइलों की बौछार की है। इसकी चपेट

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **ईरान व हिजबुल्लाह की मिसाइलों की बौछार से हाइफा तेल रिफायनरी में आग लग गई।**